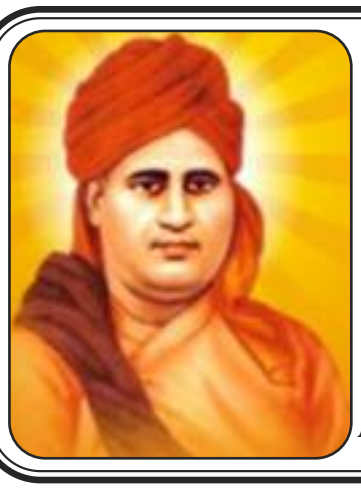

आर्योदया

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye No. 307 ARYA SABHA MAURITIUS 16th May to 30th May 2015

AYONS UNE LONGUE VIE ACTIVE

ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतम् समोः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।।

Om! Kurvanneveha karmāni jijeevishecchatam samah ।
Evam tvayi nānyathetosti na karma lipyate nare ।।

Yajurveda 40/2

Glossaire / Shabdārtha

Naré – O Etre Humain ! (Le Seigneur s'adresse à l'homme), **Iha** – dans ce monde, **Karmāni** – toutes les actions qui sont conformes aux enseignements des Vedas, **Kurvan** - en entreprenant, **Eva** – seulement, **Shatam samā** – cent ans, **Jijeevishe**t – Tu dois aspirer à vivre, **Evam** – Si tu te comportes ainsi ou si tu agis de cette façon, **Twayi Nare** – C'est ainsi que ta vie est préconisée par le Seigneur, **Karma na lipyate** – Tu ne dois entretenir aucun attachement excessif à tes actions, à ta réussite, à tes accomplissements ou à tes biens matériels. En d'autres mots, tu dois avoir en toi une culture d'apnégation, **Itah anyathā na asti** : Il n'y a pas d'autres moyens. C'est la seule option de ton salut menant à ton but ultime de la vie sur la terre. C'est d'atteindre le Bonheur Eternel (Moksha).

Interprétation / Anushilan

Ce verset (mantra) provient du quarantième chapitre du Yajur Veda et fait aussi partie d'Ishopanishad. Dans le contexte de ce mantra il faut que l'on sache les attributs suivants du Seigneur : De par son omniscience, son omniprésence et son omnipotence, il est présent dans notre âme et dans notre esprit, et il est conscient (au courant) de notre pensée, de nos actions et de nos agissements. Rien ne lui échappe.

Il exhorte l'homme de se défaire de sa paresse, de se mettre au travail, de persévérer et d'être toujours actif dans la vie, c'est par le travail que l'on doit gagner sa vie, il n'y a pas d'autres moyens de vivre dignement sur la terre. C'est bien évident que celui qui ne travaille pas n'aura pas le moyen de vivre. Il est de même stipulé dans les Vedas que celui qui ne travaille pas n'a pas le droit de vivre.

Le Seigneur lui demande aussi d'entreprendre seulement des actions valables et conformes aux enseignements des Vedas, tout en méprisant et en évitant des actes répréhensibles et des pêchés.

En même temps le Seigneur lui conseille vivement d'acquérir une bonne éducation qui englobe tous les aspects de la vie. Mais, pour ce faire, il faut que pendant sa vie estudiantine il observe une discipline stricte et le célibat, qu'il consomme une nourriture saine, qu'il pratique le yoga et qu'il ne s'adonne pas aux plaisirs sensuels. Il faut qu'il ait une maîtrise parfaite de soi.

En outre, le Seigneur fait ressortir clairement que le progrès du côté intellectuel, social, matériel et spirituel de l'homme est souvent obstrué par l'attachement. Pour surmonter cet obstacle, le Seigneur préconise que l'homme ne doit entretenir aucun attachement excessif à ses actions, à sa réussite, à ses accomplissements ou à ses biens matériels. En d'autres mots, il doit avoir une culture d'abnégation.

En adoptant une ligne de conduite pareille l'homme jouira d'une excellente santé, de la vigueur, de la force physique et d'une longue vie. Il sera aussi doté d'une grande capacité intéllectuel, d'une très bonne mémoire, d'une volonté ferme et d'un humanisme exemplaire. Il connaitra aussi le bonheur, le progrès, la prospérité, l'honneur et la gloire. Il ne lui manquera rien. Il sera toujours à l'abri du besoin, et il ne sera jamais malheureux, car le Seigneur aime et protège les gens qui ne sont jamais oisifs et qui s'adonnent corps et âme à leur devoir et an travail. Il les bénit et les gratifie des vertus et d'autres pouvoirs.

Une telle personne selon les enseignements des Vedas peut aspirer à vivre cent ans et même au-delà si elle peut se libérer de tout attachement. Elle peut même vaincre la mort, tout comme Swami Dayanand-fondateur de l'Arya Samaj, Bhisma Pitamaha dans Mahabharat et d'autres sages, l'ont fait, par le pouvoir du yoga, en la repoussant et la faisant attendre en choisissant eux-mêmes leur moment propice de mourir voire de délaisser leur corps physique pour l'au-delà.

N. Ghoorah

परिवार दिवस

डॉ० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न - प्रधान, आर्य सभा मॉरीशस

कुछ दिन पहले 'परिवार दिवस' मनाया गया। इस दिवस के सभी आयोजनकर्ताओं ने यही कोशिश की कि सभी यह समझें कि परिवार को अधिक से अधिक अच्छा कैसे बनाया जाय।

'परिवार' क्या है? इसके बारे में समाज शास्त्रियों ने अपने-अपने विचार प्रकट किये हैं। एक समाजशास्त्री ने 'परिवार' की परिभाषा देते हुए लिखा कि परिवार एक सामाजिक संस्था है। यह संस्था पति-पत्नी और बच्चों को जुड़ने से बनती है। इस संस्था द्वारा परिवार के सदस्यों की ज़रूरतों को पूरा किया जाता है।

एक दूसरे समाजशास्त्री ने लिखा – 'जब दो व्यक्ति विवाह-बन्धन में बन्ध जाते हैं तब पति-पत्नी और माता-पिता बनकर अपने पुत्र-पुत्रियों को अपनी परम्परागत संस्कृति को अपनाने की शिक्षा देते हैं। परिवार का यह सम्बन्ध खून का होता है, बड़ा ही घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

पाठकवृन्द ! हरेक समाज अपनी संस्कृति के अनुसार ही अपने लोगों को शिक्षा देता है। परन्तु वेद समस्त मनुष्यों को एक परिवार मानकर मानव समाज की बात करता है।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

कर्मशील माता-पिता

माता-पिता के समान श्रेष्ठ, तपस्वी, महा-त्यागी, सहनशील और पालक-पोषक विश्व में कोई भी नहीं है। उनके तप-त्याग और पुरुषार्थ से ही संतानों की रक्षा होती है। वे अपने सुख-शान्ति की परवाह न करते हुए प्राणों की बाज़ी लगाकर अपने बच्चों की रक्षा करते रहते हैं। धन्य है वह संतान जिसका जन्म धार्मिक, कर्मशील, सुशील, सुसंस्कारी, अनुभवी और चतुर माता-पिता के यहाँ होता है। सौभाग्यशाली हैं वे पुत्र-पुत्रियाँ जिनका पालन-पोषण कर्मयोगी माता-पिता की शरण में होता रहता है।

माँ-बाप से बढ़कर संसार में कोई भी गुरु नहीं होता है। जो शिक्षा उनकी गोद में पलकर मिलती है, वह जीवन पर्यन्त काम आती है। वास्तव में सभी चतुर और सुसंस्कारी माता-पिता की सलाह लाभप्रद होती है। वे तो सही मार्गदर्शन करके अपने बच्चों को सज्जन बनाने का प्रयत्न करते रहते हैं, ताकि वे मानव-मूल्य का पाठ पढ़कर अच्छे नागरिक बन सके। इसीलिए वे जीवन भर हमारे प्राणप्रिय होते हैं। अतः माता-पिता से नित्य प्रेम बढ़ाना संतानों का धर्म है।

*सत्यार्थप्रकाश में महर्षि जी ने लिखा है कि **मातृमान पितृमान आचार्यवान पुरुषो वेदः** अर्थात् हमारे तीन उत्तम शिक्षक होते हैं, पहला शिक्षक है माता, दूसरा है पिता और तीसरा है आचार्य, जिन तीन गुरुओं के द्वारा आदमी ज्ञानी बनता है। वह सफलता पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है। भाग्यवान है वह संतान जिसके माता-पिता सज्जन और धार्मिक होते हैं। प्रथम गुरु के रूप में माँ शिशु को गोद में दूध पिलाती, सेवा शुश्रूषा और खिलाती-पिलाती हुई बहुत सी ज्ञानप्रद बातें सिखा देती है। दूसरा गुरु पिता है, जो बच्चे को दुनिया के सम्बन्ध में हमेशा ज्ञान देता रहता है। उसे घुमा-फिरा कर अनुभवी बनाता है और सत्संग आदि में ले जाकर सत्यवादी, समाजसेवी तथा धार्मिक बनने की प्रेरणा देता है, ताकि वह कुसंग, दुर्व्यसन आदि से बचकर श्रेष्ठ और सभ्य बालक बन सके। इसी प्रकार उसके आचार्यगण होते हैं, जिनकी शरण में जाकर वह विद्वान् बनता है। इन तीन कर्मशील गुरुओं के सहारे आदमी मानव बन पाता है। इन तीन कर्मयोगी सज्जनों के ऋणी हम सदा रहेंगे ।*

व्यास जी के मतानुसार माता-पिता के समान कोई देवता नहीं, उनसे बढ़कर कोई तीर्थ नहीं। वे ही हमारे पूजनीय हैं। वे ही हमें जीवन पर्यन्त आशीर्वाद देने वाले देवता होते हैं, वे कभी नहीं चाहते कि उनकी संतानें दुखी हों, दयनीय हों, या अस्वस्थ हो। माता तो अपनी ममता, दया, स्नेह, सुख शान्ति आनन्द आदि सब कुछ अपनी संतान के लिए समर्पित करने वाली होती है। पिता भी कड़ी मेहनत करके अपने बच्चों को सुख-समृद्धि की ओर बढ़ाने वाला होता है। माता-पिता का ऋण हम कभी नहीं चुका सकेंगे।

माता-पिता तो पूजनीय, आदरणीय, सम्माननीय होते हैं। उनकी आज्ञा का पालन करना, जीवन भर उनकी सेवा में तत्पर रहना और उनकी हर आवश्यकता को पूर्ण करना प्रत्येक संतान का परम धर्म है। जो व्यक्ति हमेशा अपने माता-पिता को प्रसन्न रखते हैं, हर पल उनकी जरूरतों का ख्याल करते हैं और उन्हें देवतुल्य पूजते हैं, उन्हें माता-पिता के आशीर्वाद से सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं, उनका जीवन स्वर्गमय हो जाता है।

दुर्भाग्य से जो पुत्र-पुत्रियाँ बड़े होकर स्वार्थी बन जाते हैं और अपने देवता समान माँ-बाप को भूल जाते हैं और उनका आदर-सम्मान नहीं करते, उनकी सेवा का ध्यान नहीं करते, वृद्धावस्था में उन्हें अकेले छोड़कर अलग दुनिया बसाते हैं, वे सारे वैभव प्राप्त करके भी सुखी नहीं होते हैं। माता-पिता के अभिशाप से कभी बच नहीं सकते हैं, क्योंकि जन्म से पालन-पोषण आदि करने वाले देवी-देवता के प्रति कृतघ्न होना महापाप है।

मातृ दिवस के संदर्भ में हम सभी पुत्र-पुत्रियों से आग्रह करते हैं कि आप हर प्रकार का सुख और आनन्द अपने माता-पिता को अवश्य दें। अज्ञानता वश अगर आप उनसे अलग हो गए हों, तो उनकी शरण में जाकर अपनी भूल स्वीकार करें और क्षमा-याचना करके उन्हें अपने पास रखें। उनकी वृद्धावस्था को अदीन बनाने का पूरा प्रयत्न करें। माँ-बाप तो जीवन भर अपनी संतानों के लिए प्राण निछावर करने वाले होते हैं। वे सब कुछ भूल कर अपने वरदान से आप के कल्याण की कामना करेंगे। मातृ और पितृ दिवस के अवसर पर सभी दीन दुखी, पीड़ित और असहाय वृद्ध माता-पिता को संतानों का ढेर सारा प्यार मिले । मातृदिवस के साथ पितृदिवस भी मंगलमय हो ।

बालचन्द तानाकूर

स्वामी जी नेक सलाह मानते थे

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न -- उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

सत्यार्थप्रकाश के रचयिता स्वामी दयानन्द सरस्वती अच्छी सलाह मानने के लिए सर्वदा उद्यत रहते थे। अपनी कलकत्ता यात्रा के दौरान वहाँ पहुँचे और लगभग ४ मास रहे। चार मास के प्रवास काल में भारत वर्ष की बढ़ती प्रगति को देखा। वहीं के लोगों ने सब से पहले व्यापार अँग्रेज़ों को शरण दी थी और वहीं के लोग उन्हें याने अँग्रेज़ों को निकाल बाहर करने का उपक्रमकर रहे थे तो उन्हें अच्छा लगा। इसके अलावा वहाँ के तत्कालीन मूर्धन्य विचारकों, विद्वानों और समाज सुधारकों की सलाह सुनते रहे। उसी बीच तरुण ब्रह्मोसमाज के नेता केशवचन्द्र ने स्वामी जी से मिल कर विनम्र सलाह दी थी कि स्वामी जी चूँकि अधिकतर हिन्दी प्रदेशों में काम करते थे इसलिए उन्हें हिन्दी में ही लिखना व व्याख्यान देना चाहिए। स्वामी जी ने तत्काल तो वचन नहीं दिया था पर नोट लेते हुए कहा था कि वे विचार करेंगे और अगर सलाह सही जँची तो समय आने पर उस पर अमल करेंगे। सचमुच १८७४ में उस नेक विचार पर अमल किया और डिप्पटी कलक्टर राजा कृष्णदास के कहने पर अपने विचारों को पुस्ताकार देने का निश्चय किया तो उसी देशी भाषा हिन्दी में १२ जून सन् १८७४ में श्रुतिलेख करना आरम्भ किया।

स्वामी जी मेधा बुद्धि के धनी थे, उनकी स्मरण शक्ति ग़ज़ब की थी। उन्होंने कुछ पंडितों को लिखने का काम सौंप दिया। देखते-देखते काम आगे बढ़ने लगा। बहुत कम समय में अपना महान्, कालजयी ग्रन्थ लिखकर समाप्त कर दिया। बनारस में उस ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ। इतने अल्प समय में इतना महान् ग्रन्थ लिख देना कोई मामूली कार्य नहीं था। वह भी ऐसी भाषा में जो न उनकी मातृ भाषा थी और न ही बहुत लम्बे समय तक अध्ययन किया था। यह इस बात का प्रतीक है कि स्वामी जी बहुत बड़े मेधावी विद्वान् थे। अगर स्वामी जी द्वारा विरचित सत्यार्थप्रकाश न होता तो शायद इतनी जल्दी आर्य समाज की स्थापना देश-विदेश और द्वीप-द्वीपान्तर में न हो पाती।

१८६९ में जब स्वामी जी ने काशी का ऐतिहासिक शास्त्रार्थ किया था तो तीन सौ लोग एक तरफ़ थे और उस समय के काशी नरेश उन्हीं के दल में बैठे थे और हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार गद्य और पद्य दोनों में कलम चलाने वाले और जिनके नाम पर हिन्दी साहित्य के इतिहास में भारतेंदूकाल से विख्यात है वे भी प्रतिवादी के पक्षधर के रूप में बैठे थे। अन्त में स्वामी जी की विजय हुई थी। उस वक्त सौराष्ट्र के कुछ दयानन्द प्रेमी भी वहाँ गए हुए थे। उन लोगों ने स्वामी जी को धर्म प्रचार हेतु अपने प्रान्त में आने की माँग की थी। तब स्वामी जी ने उनकी माँग को स्वीकारते हुए आश्वासन दिया था कि समय आने पर ज़रूर पधारेंगे ।

कलकत्ता से लौटने के थोड़े ही समय बाद स्वामी जी ने पश्चिम की ओर जाने का मन बना लिया था। जब स्वामी जी बम्बई पहुँचे तो उन्हीं लोगों ने पुनः माँग की कि अपने विचारों को आगे फैलाने के लिए एक समाज स्थापित किया जाए। विचार-विनिमय के बाद स्वामी जी को सलाह अच्छी जँची और समाज स्थापित करके उन्हीं लोगों को भार सौंप दिया। यहाँ भी हम देखते हैं कि स्वामी जी अच्छी सलाह मानने में देर करते थे पर अन्ततोगत्वा मान ही लेते थे।

इस लेख के माध्यम से हमने कई उदाहरण देकर बताया कि स्वामी जी महाराज अच्छी सलाह मानने में आना-कानी नहीं करते। केवल मानते ही नहीं किन्तु कार्यान्वित भी करते थे। लेकिन स्वामी जी महाराज की जीवनी पढ़ते हुए एक स्थान पर देखा कि अपने हितचिन्तकों की एक माँग पर या सलाह पर ध्यान नहीं दिया और अगर मान लेते तो ५९ साल की आयु में उनका देहावसान नहीं होता।

बात वहाँ की है, जहाँ महाराज जोधपुर जाने को ठान लेते हैं। उनके अनन्य भक्त एवं अनुयायी शाहपुराधीश को जब मालूम होता है कि महाराज जोधपुर प्रचारार्य जाना चाहते हैं तो पूरे ज़ोर लगाकर मना किया था कि वे वहाँ न जाएँ। इसी प्रकार अजमेर में भी जो लोग जोधपुर की स्थिति से भली-भाँति परिचित थे। उन लोगों ने भी स्वामी जी को बताया था कि जोधपुर न केवल प्राकृतिक दृष्टि से ही वरन धार्मिक दृष्टि से भी मरुभूमि है। यह भी लोगों ने बताया था कि वहाँ के नरेश सर जसवन्तसिंह एक वेश्या के फंदे में फँसे थे। स्वामी जी तो सत्य के पुजारी थे। वे वहाँ जाकर स्पष्ट शब्दों में उस बुराई के बारे में कहेंगे। लाख समझाने पर भी स्वामी जी जोधपुर गये। उसी कारण स्वामी जी को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। यदि स्वामी जी सलाह मान लेने तो कितना अच्छा होता। शायद जो आर्यसमाज आज है वह नहीं होता। एक दूसरा ही समाज देकर यहाँ से जाते।

काँतोरेल आर्यसमाज में

पण्डिता चन्द्रिका राजू

शुक्रवार ८ मई २०१५ को आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में एवं मोका आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से काँतोरेल आर्यसमाज एवं महिला समाज में साढ़े छह बजे एक वैदिक धर्म पर एक प्रवचन का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ, जिसमें पण्डित हंसराज मंगर जी ने सपरिवार भाग लिया। यज्ञ पण्डित सत्यानन्द फाकू जी द्वारा हुआ। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए अनेक महानुभाव एवं विद्वान्-विदुषीगण दूर-दूर से आए हुए थे। उनमें पण्डिता राजवंश सोलिक जी, पण्डिता अनिता छोटी जी, पण्डिता चन्द्रिका राजू जी, पण्डिता सविता तोकुरी जी और पण्डिता विश्वानी हेमराज जी थीं। यज्ञ की समाप्ति के बाद समाज के प्रधान श्रीमान हंसराज मंगर जी द्वारा स्वागत भाषण हुआ। उसके बाद पण्डिताओं द्वारा उपनिषद् के श्लोकों का गायन हुआ। फिर पण्डिता अनिता छोटी जी ने मातृ दिवस पर एक सुन्दर सन्देश दिया। उसके बाद पण्डिताओं द्वारा एक भजन हुआ। भजन के बाद पण्डिता राजवंश सोलिक जी द्वारा बच्चों के प्रति माता के कर्तव्य के बारे में एक भावपूर्ण सन्देश दिया गया। एक और भजन के बाद, डा० उदयनारायण गंगू जी ने वैदिक वाङ्मय के आधार पर माता-पिता की महिमा पर विस्तार से प्रकाश डाला, उन्होंने बच्चों के निर्माण में माता-पिता की भूमिका पर बल दिया।

अन्त में श्रीमान् लेखराजसिंह रामधोनी जी को प्रस्तुत किया गया। उन्होंने उपस्थित महानुभावों को कार्य की शोभा बढ़ाने पर धन्यवाद दिया ।

आरती गान एवं शान्ति पाठ के बाद सभा का विसर्जन हुआ।

परिवार दिवस

पृष्ठ १ का शेष भाग

अथर्ववेद ने परिवार के बारे में उपदेश दिया – **सह्रदयं सांमनस्यम् विद्वेषं कृणोमि वः ।** अर्थात् सबके ह्रदयों और मनों में प्रेम हो, किसी के मन में शत्रुता न हो। फिर वेद कहता है– **अनुव्रतः पितुः पुत्रो, मात्रा भवतु सम्मनाः ।** पुत्र पिता के समान शुभ कर्मों को करने वाला और माता के समान प्रसन्न मन वाला बने ।

पति-पत्नी के बारे में वेद का उपदेश है – **जाया पत्ये मधुमतीं, वाचं वदतु शन्तिवाम् ।।**

पत्नी पति के प्रति और पति भी पत्नी के प्रति मीठे और शान्तिदायक वचन बोले । फिर अथर्ववेद आगे उपदेश देता है –

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्, मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यंञ्चः सव्रता भूत्वा, वाचं वदत भद्रया ।।

अर्थात् भाई-भाई से द्वेष न करे और बहिन बहिन से द्वेष न करे। भाई-बहिन सभी उत्तम प्रगति करने वाले तथा सत्कार करने वाले और समान गुण, कर्म, स्वभाव वाले होकर मांगलिक रीति से शुभ वचन बोला करें।

आज बहुत से परिवारों में टूटन और घुटन दिखाई देती है। माता-पिता कहते हैं - बच्चे हमारे वश में नहीं हैं। भाई-बहनों में शत्रुता का भाव है। इस परिस्थिति के कई कारण हैं।

एक कारण तो यह है कि बच्चे माता-पिता के बीच मतभेद की दीवारें देखते रहते हैं। जब पति-पत्नी के बीच अकसर झगड़ा होता रहता है तब बच्चों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। भावी परिवार के संचालन का पति-पत्नी का बड़ा दायित्व होता है। इसलिए बहुत ज़रूरी है कि वे बड़ी समझदारी से काम लेवें ।

बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में पति-पत्नी दोनों को बराबर ध्यान देना चाहिए। प्रति मास कुछ न कुछ रकम बचाकर बच्चों को अच्छी शिक्षा देने में खर्च करना चाहिए। भूलना नहीं चाहिए कि सन्तान निर्माण एक कला है। उत्तम सन्तान का निर्माण ही मानवता के विकास अथवा मानव निर्माण की आधारशिला है। श्रेष्ठ सन्तान का निर्माण गृहस्थ की सबसे बड़ी साधना है। कुछ बच्चे ज़िद्दी होते हैं। उन्हें कैसे ठीक किया जाए? ऐसे बच्चों से माता-पिता बड़े परेशान रहते हैं। जब बच्चे को बहुत डाँटते हैं और बात-बात में हुक्म देते रहते हैं तब वह विद्रोह कर बैठता है। बड़ों में न्यायप्रियता, मधुरता तथा सचाई कितनी है, बच्चा इस बात को फ़ौरन ताड़ जाता है। बच्चे के प्रति आदर भाव अपनाने से उसकी चंचलता और हठीलेपन को खत्म किया जा सकता है। माँ-बाप बाल बालमनोविज्ञान की विशेषताओं को ध्यान में रखकर सही उपाय अपनायें तो वे बच्चे को हठी बनने से रोक सकते हैं ।

यदि किसी माँ-बाप के दो-तीन बच्चे हों और यदि वे अपने बच्चों से भेद-भाव का व्यवहार करें तो भी वे उद्दंड, ईष्यालु और असभ्य हो जाते हैं। बच्चे की अवस्था-भेद, प्रकृति-भेद, प्रकार-भेद आदि पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार एक ही फुलवारी में अलग रंग, गुण और आकार के फूल होते हैं, उसी प्रकार एक माँ की ही जन्मी सन्तानें भी भिन्न-भिन्न प्रकार की होती हैं। उनके स्वभाव और गुण अलग होते हैं, इसलिए बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाना बड़ा कठिन होता है।

माता-पिता को कोशिश करनी चाहिए कि बचपन से ही उनके पुत्र-पुत्रियों में स्वार्थ, लालच की जगह परस्पर प्रेम, त्याग और क्षमा की भावना जन्म ले। अच्छे संस्कार देने से ही बच्चे बड़े होकर अच्छे परिवारों का निर्माण कर सकते हैं।

आज की नारी

भगवन्ती घूरा

नारी तेरी शान है निराली तू है गुणों की अवतारी ।
माँ बहन बेटी पत्नी के रूप में हो अति प्यारी ।
तप त्याग सहनशीलता और ममता की है बलिहारी ।
लगती हो नाज़ुक कोमल पर हो शक्तिशाली ।
नर जीवन को पूरन करती बनके अर्धांगिणी ।
घर परिवार को सँभालती बनके स्वामिनी ।
प्रशस्त समाज बना है जब कि नारी भी है समाज सेवी ।
वेद माता का आदेश है सम्राज्ञी भव अतः तू जी बनके रानी ।
सरस्वती माता विद्या की देवी ने नारी को दासी से बनाई रानी ।
ममता की देवी मातृ शक्ति से सजी नारी सदा से है न्यारी ।
यश और वंश की वृद्धि करती है बनके जीवन धारिणी ।
दिव्य अद्भुत गुण से सृजन से बनती है सबके मन का मित ।
कुशलमंगल परिवार के सभ्य जन से होता है समाज का उत्थान
उत्कृष्ट समाज से ही है निश्चित राष्ट्र का कल्याण ।
अतः राष्ट्र निर्माण में भी है नारी का योगदान ।

खुशी की बात है कि आज नारी स्वाधीनता से अपनी गरिमा और सौजन्य से जीवन के हरेक क्षेत्र में योगदान देकर निपुणता से आगे बढ़ रही है। बुद्धि, विवेक, वाणी और कर्म से दायित्व निभा रही है। फिर भी आज हम सब के लिए एक चुनौती की घड़ी है। हमारे अगली पीढ़ी का उज्ज्वल भविष्य।

नर-नारी के कामकाज और अति व्यस्त रहने के कारण पारिवारिक और सामाजिक जीवन में असंतुलन उत्पन्न हो गया है। आज की नई पीढ़ी कशमकश में जी रही है। सुव्यवस्था और परवाह का ललकार है समाज एवं परिवार के लिए। पुनः नारी के योगदान की उम्मीद है जब कि नारी पर यह सूक्तः **'माता निर्माता भवतिः'** लागू है। आदि काल से नारी को वैदिक धर्म के अनुसार संस्कारों द्वारा जीवन परिष्कृत करने की क्षमता प्राप्त है। आज तक आते-आते हम वैदिक मूल्यों से दूर हो गये हैं अतः हमें पुनः वेद की ओर जाना चाहिए। नई पीढ़ी के सुप्रभात के सूर्योदय में नारी का भी हाथ होना अनिवार्य है। वैसे भी इतिहास एवं साहित्य के पन्नों पर नारी के अपूर्व शक्ति के कारनामे अंकित हैं और मालूम हुआ है कि कामयाब पुरुष के पीछे नारी का ही हाथ होता है। सुप्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण जैसे महा काव्य की रचना अपनी पत्नी के शक्ति पूर्ण सहनशील सुझाव युक्त वाणी से प्रभावित होकर ही की थी।

धन्य है तू नारी अपूर्व गुणों से बनी रहो मोती ।
आन-बान से भरपूर बनी रहे तेरे जीवन की लाली ।।

कोटिशः धन्यवाद

आर्य सभा ने अन्य धार्मिक संस्थाओं के सहयोग से नेपाल पीड़ित जनों की सहायता निमित्त ३० अप्रैल को एक प्रेस सम्मेलन किया और दानदातओं से अपील की कि वे आर्य सभा को अपना आर्थिक दान भेजें। सम्भव हो तो वह दान प्रधान मन्त्री जी के हाथों में सौंप दिया जायगा, अन्यथा उसे भेजने की अन्य व्यवस्था की जायगी।

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हमारे उदार भाई-बहनों ने सभा की प्रार्थना पर यथोचित ध्यान दिया और यथाशक्ति अपना दान हमारे पंडित-पंडिताओं के द्वारा सभा तक पहुँचाया । हम समस्त दानदाताओं का धन्यवाद करते हैं और दान इकट्ठा करने वाले सभा के पंडित-पंडिताओं के प्रति भी अपना आभार प्रकट करते हैं । सभा के मुखपत्र, 'आर्योदय' पर दाताओं के नाम और दान प्रकाशित कर रहे हैं ।

डॉ० उदय नारायण गंगू

NEPAL SOLIDARITY FUND

cont. from last issue

S/N	Name	Amount Received Rs
	Balance b/f	*89,627.00*
1.	Domah Kamal Nayan	1,000.00
2.	Harryduth Chummun	500
3.	Geerjanand Manoruth	300
4.	Devika Proag	500
5.	R.Mattapulut	100
6.	Ravin Oogur	100
7.	Indralall Chooromoney	200
8.	Anjanee Proag	200
9.	Avinash Babooram	100
10.	Maharani Seebharnath	300
11.	Rajpatee Poonith	500
12.	Hoomawtee Seebharnath	500
13.	Kailash Beekharry	500
14.	Seewantee Ramdewar	200
15.	Heera	200
16.	Ayushi Beeharee	500
17.	Pandit Puttea	200
18.	B.Ramkissoon	500
19.	Hurryduth Chuckowree	1,000
20.	Satyajit Chooromoney	3,000
21.	Narainduth Chooromoney	225
22.	Vishnuduth Srikissoon	300
23.	Pradeep Poonit	200
24.	Suresh Panchoo	100
25.	Anumada Chuckowree	1,000
26.	Darmayash Dev Behut	1,500
27.	Babooram Kissoonduth	100
28.	S. Chooromoney	500
29.	Bassuntlall Chooromoney	500
30.	Chand Chooromoney	1,000
31.	Siam Sookun	200
32.	Satyanand Chooromoney	500
33.	Avedanand Jeetoo	200
34.	Indranee Mohun	300
35.	Rajlall Puttyah	100
36.	U.Chooromoney	500
37.	Ayushee & Arvina Belut-Heereea	575
38.	Deoduth Mittoo	300
39.	Indurjeet Ramrakha	100
40.	Navneesh Hulkhoree	100
41.	Kevin Chadee	100
42.	Manoj Mittoo	100
43.	Vasudha Radhoa	100
44.	Sungkur Amichand	100
45.	G. Panchoo & N. Angateeah	100
46.	Ramdoss Soobhash	100
47.	Ramdoss Yash	100
48.	Amrita Angoteeah	100
49.	Sona Angoteeah	250
50.	Poonyth M., C.B. Kokil & G. Heeraman	150
51.	Luxmeena Takan	100
52.	Vijay Takan	100
53.	Dhuneelall Ramessur	100
54.	S. Beedasy & A. Angoteeah	100
55.	Dhiraj Bundhoo	100
56.	Kamal Boygah	100
57.	Vijay Ragoonundun	100
58.	Robin Angoteeah	100
59.	Manisha Angoteeah	100
60.	L. Angoteeah	100
61.	M. Angoteeah, M. Canhye & K. Mittoo	125
62.	Soomaree Sardanand	200
63.	Mahabal Hurry	100
64.	Bhugny Seenarain	200
65.	Jhummun Amrowtee	500
66.	Marc Rouget	100
67.	Ramnarain, Ashwinee & R. Bhugny	125
68.	Deepnarain Bhugny	100
69.	Neelesh Boodhun	200
70.	Lalita Boodhun	200
71.	Randhir Hemraj	200
72.	Vedit Maulloo	100
73.	R. Oomur,S. Oomur & D. Maunkee	125
74.	I. Mohesh, K. Mussai, Ujoodha & R. Beedassy	275
75.	Rageevi Papiah	200
76.	Vikash Nundloll	200
77.	Culyanee Nundloll	100
78.	Suvita Nundloll	100
79.	Bharati Nundloll	100
80.	Poospawtee Nundloll	100
81.	Sundia Nundloll	100
82.	Vimla Joonarain	100
83.	Pamawtee Nundloll	100
84.	Savitree Sovedagar	100
85.	Issur Nishta	100
86.	Aujayeb Savitree	100
87.	Deoranni Nundloll	100
88.	Lilaotee Nundloll	100
89.	Dewantee Nundloll	100
90.	H. Deoranee & I. Ramchurn	100
91.	Coonjan Aarti	200
92.	Nandanee Sewpal	100
93.	Sewloll Premila	200
94.	S. Prahalad & I. Sewloll	125
95.	Nuckchady Roshni	200
96.	Beekharry Madone	300
97.	K. Appadoo, L. Bissur & D. Mootoosamy	150
98.	Seegobin Devi	200
99.	Khodabaccus Salmah	100
100.	Bilzur Suresh	100
101.	Choollun Premduth	100
102.	Nirmol & Rani	100
103.	Joity & Bebe	100
104.	T. Chuttur, S. Kullur & Anowree	125
105.	Gungaram Ajay	100
106.	Gopee Munglawatee	100
107.	Shanboo Ashwan	100
108.	Hermitage Arya Samaj & A. Mohabeer	180
109.	Seebaluck Vikram	200
110.	Seebaluck Kaviraj	100
111.	Bissessur Satish	100
112.	Kaleeah Bhagwatee	100
113.	Bissessur Savita	100
114.	Beekarry Dewantee	200
115.	P. Sookun, B. Chuttur & B. Beekharry	125
116.	Beerjoo Dharam	150
117.	Bundhun Devanand	100
118.	Bundhun Aneerood	100
119.	Ramjuttun Shella	100
120.	Ramjuttun Premila	100
121.	Seebaluck Jaywantee	100
122.	Babooa Vinaye	100
123.	Babooa Vijaye	100
124.	Babooa Jayantee	100
125.	Babooa Ouma	100
126.	Toohul Kamla Devi	100
127.	Kaleeah Vijay	100
128.	Beekawoo Prakash & family	500
129.	Bundhun & family	300
130.	K. Ramjuttun,N. Chummun & M. Bhundoo	100
131.	Seebaluck Sewnarain	200
132.	K.Ramsurn, H.Ramsurn & N.Meerun	125
133.	Ramsurn Sheela	100
134.	Geeta Mandal Women's Association	200
135.	K. Ramsurn, D. Gopee & R. Neewoor	125
136.	Foolheea Seeta	100
137.	Foolheea Haman	100
138.	Muckoo Vidya	100
139.	K. Boodhoo, K. Bhorosy & K. Seetohul	125
140.	Maunkee Sanyogeeta	100
141.	Beedassy Dhanwantee	200
142.	Sangram Mahila Samaj	600
143.	Rambhojun Sheela	200
144.	Ramsurn Kaminee	100
145.	Ramsurn Madree	100
146.	J. Mahabal & S. Abelak	100
147.	Abelak Balmick	100
148.	U. Boodhoo, V. Conhye & S. Gobin	175
149.	P. Auchaybur, G. Muckoo & A. Jhumun	275
150.	Chineeah, S. Gokool & B. Hurnath	275
151.	R. Teeluckdharry, S. M. Moochooran, A. Meetoo, O. Bheekka & D. Oomah	200
152.	Abeeluck Jagdeo	300
153.	Gopaul Harry	100
154.	Pandit Goonraaz	500
155.	Cheddy Mantee & N. Gopaul	125
156.	Anirood Gunga	100
157.	D. Moti	200
158.	Silabye Ghurburrun	100
159.	Beeloo Chandrajotee	2,000
160.	Deoduth Busawon	200
161.	Khoody	200
162.	Dhaneshwur Bahane	200
163.	Bissoonauth Videsh	1,000
164.	S. Napaul	200
165.	Vikash Nundloll	200
166.	Anand Kinnoo	200
167.	Nirmal Swaroop	200
168.	S. Ramdhun	200
169.	C. Jankeeparsad	100
170.	Nundita Beeham & Rambhojun	250
171.	Potheegadoo	400
172.	A. D. Meetoo,S. Neeraj & B. Surroop	190
173.	J. Nath Varma	100
174.	Ashwini Gunputh Surnam	100
175.	Ghura Yuvraj	100
176.	Shersingh Peerthy	100
177.	Prakash Nundloll	100
178.	Rajeev Seeraj	200
179.	Hemanraj Jaunky	500
180.	Dharmanand Ramtohul	400
181.	Ghurburun Deepsingh	200
182.	Boodia Navindra	200
183.	Seewoo Burhoa	100
184.	Jagaseeam Sunein	100
185.	Treesha Seewoo	100
186.	Champa Kooblall	200
187.	Dayanand Sookoo	100
188.	P. Ramjun & S. Gokool	100
189.	Isari Mithyan	200
190.	Bhugun Basdeo	100
191.	Mangroo Vishal	100
192.	Dhunraj Bhugun	200
193.	Mahen Bhugun	200
194.	Gowramah Thomiah	100
195.	J. Seegolam	100
196.	Solachnee Seegoolam	200
197.	Nadege Rico La Fleur	300
198.	S.Taken, A.Custnea, T.Seechurn,S. Pirthee, T.Deenoo	180
199.	Imprimerie Moderne & Gaytree Ramdhun	250
200.	B. Ramdin	100
201.	Yadessen Minien	200
202.	Vijay Kumar Seerutun	300
203.	Amritta Seeruttun	300
204.	Sharda Bissoondyal	100
205.	D. Haulkory	100
206.	R. Moochooram & S. Beewa	150
207.	S. Joykurun	200
208.	A. Nuckched	100
209.	D. Hurgobin	100
210.	Surendra Dayal	1,000
211.	Deobaruth Seeruttun	100
212.	Parichay class-V.Pancha Students	253
213.	Jaya Chumroo	100
214.	PCK Sunday Sch. Std V & VI	107
215.	Prema Dayal-PCK Teacher	100
216.	Mokshada Reedoy	100
217.	PCK Aryan Vedic School STD IV	115
218.	Ghurburrun Sooneetee	200
219.	PCK Sunday Hindi School STD III	146
220.	Depti Ghoora & Seereekissoon	100
221.	PCK Sunday Hindi School STD I, 11	132
222.	Students of Praveshika & Prathama PCK	239
223.	N. Dahoo, Dunputh, D. Lallbeeharry	120
224.	Ramphul Corsaless	500
225.	Leckrajsing Roopun	100
226.	Devi Chhoolun	100
227.	Indira Boyjonauth	100
228.	V. Ramasawmy	100
229.	Iswarduth Kessewnath	100
230.	Ansee Pavaday	50
231.	D. Boobun, K. Nithoo & Y. Brijmohun	115
232.	Anita Ramdian	100
233.	Dr. Purahoo	200
234.	Mala Caulichurn	500
235.	Antee & Reenu Nuckched	225
236.	Jootun	100
237.	Champalall	100
238.	M. Jootun	100
239.	Krishnawtee Dussoye	100
240.	Devranee Seerutun	200
241.	Sanjeev Seerutun	200
242.	Neelay Seerutun	100
243.	Shruti Seerutun	100
244.	Jyoti Seerutun	100
245.	Jeewantee	100
246.	Rita,Sabite,Parmowtee & Premila	225
247.	Bansantee	200
248.	Giantee Sugun & Hemowtee	150
249.	Geeta Luchmun & Mahen	150
250.	Jaynarain Gujadhur	200
251.	Ramkhalawon A., B. Bhurta & L. Goorbin	175
252.	Dosonyee Nemchand	100
253.	Jaswantee Gowry	300
254.	Ghurburrun Shyam	200
255.	Gunputh	100
256.	Ramdoss Baddu	100
257.	Vimla Ramdin	100
258.	C. Gopaul	100
259.	V. Gopaul	300
260.	S. Mongol	200
261.	Gunesh	100
262.	R. Suberrun & B. Bablee	150
263.	M. Ghoorah	200
264.	J. Emrit	100
265.	G. Juwaheer	100
266.	K. Kissoon	200
267.	G. Gungaram	100
268.	R.Taj & V. Sreekissoon	150
269.	S. Bheymaner	100
270.	B. Sreekissoon & D. Haulkory	150
271.	Indurjeet Ramrekha	100
272.	Seeboruth family	100
273.	R. Ramnarain	100
274.	Teeraj Ramdany	100
275.	C. Boodhoo,Canhye,K. Pauroa & D. Ramdoss	150
276.	Ramjeet Saboruth	200
277.	Sonalall Ramdoss	200
278.	Mesnil AS & AMS	6,550
279.	Jimmy Lobogun & S. Ramnawaj	125
280.	M. Moorgen, P. Mungur, A. Parmoo, & A. Narayenam	200
281.	Rita Poonith & S. Ramkissoon	225
282.	P. Sooman, S. Ramkissoon & A. Khedoo	100
283.	D. Moorgen, P. Mungur	100
284.	Christelle Mungur & R. Mungur	525
285.	Kalyanee Ramsurnsing & Y. Chundunsing	135
286.	Fadeela Ismael	100
287.	M. Banarsee & A. Bissoonauth	115
288.	S. Marcelin & E. M. Sharif	100
289.	Ashwin Bhonah	100
290.	B. Bhikea & P. Manick	150
291.	Manoj Dhansa	100
292.	Sharda Bohoree	100
293.	Devindranath Bohoree	100
294.	Narayan Tekha, L. Teeluckdharee & M. Bundhoo	175
295.	Amrita Tekha	100
296.	Prabhowtee Dhanary	200
297.	Rajwantee Ougur	500
298.	Vishanee Jeewooth	100
299.	Kaliawtee Rambohul	100
300.	Ansuya Sookhoo	200
301.	S. Jhurry Gopaul & H.P. Jhurry	100
302.	Parbeetya Sumoondur	200
303.	Teratraz Jhurry	100
304.	Amita Tooria	100
305.	Ramesh Sumoondur	100
306.	Yalini Yallappa & Dil Babajee	350
307.	Raj, Uma, Shila & Nantwaree Rughoo	1,300
308.	Avaishi, Anand & Sharvin Yallappa	750
309.	Sunita Bissonauth	200
310.	Devananlall Nundloll	100
311.	K. Gungadin	100
312.	Heralall Ramchurn	100
313.	Jeewon Nundloll	100
314.	Prem Beekharry	200
315.	Utam Nundloll	100
316.	Gian Nundloll	100
317.	K. Gungaram & Sunil Bowan	150
318.	Brizmohun Nundloll	100
319.	Hursing Nundloll	100
320.	Deepraj Kureeman	100
321.	Iswaraj Kureeman	100
322.	Akilanand Nunloll	100
323.	Camp Fouquereaux AS	550
324.	Vijaysingh Dabee	400
325.	Nityam Sen Dabee	100
326.	Mrs Medhavnee Dabee	200
327.	Dhiren Dabee	200
328.	Rajshree Dabee	100
329.	Ankita Dabee	100
330.	Bindia Dabee	100
331.	Nishi Dabee	100
332.	Krishee Dabee	100
333.	Maneesh Dabee	100
334.	Vijay Dabee	300
	TOTAL	**165,679.00**

..... *to be continued*

D.A.V College (Port Louis) – In Action
March - April 2015

The Independence Day Ceremony

The DAV College celebrated the 45th Independence Day of Mauritius as one of its yearly extracurricular activities on 11th March. His lordship the Mayor of Port-Louis, Mr. Jenito Seedoo, who was also an ex-student of DAV College, was invited as Guest of Honour on this occasion. The President of the Arya Sabha Mauritius, Dr. O.N. Gangoo was invited as Special Guest. The official ceremony started with the Flag Raising, followed by the National Anthem chanted by all the students. The Prime Minister's Message was read by the Guest of Honour. In the course of his speech he also evoked some reminiscences of his student days at the DAV College, and motivated the students to work harder as only hard work and perseverance can lead them to success in life. The ceremony concluded with a cultural programme presented by the students.

Annual Sports Day March 2015

We celebrated our Annual Sports Day on 30th April 2015 at the Germain Comarmond stadium. The activity was a great success with the entire college having participated fully at different levels of athletic competitions. It was a grand setting that started with a couple of musical items followed by a series of field and track events. The Rector of the college, Mr. Moher, welcomed everybody in his opening speech. The Chief Guest for the day was Mr. Muttarooa Vikramsing, Systems and Database Administrator at the Police IT Unit and an Ex Student of DAV College. He addressed the gathering and he encouraged all the participants to do their best in all events and congratulated the winners, in fact it was a hectic day as there was intense competition among the different houses in all the activities and games which ended to the satisfaction of one and all.

Student of D.A.V College – International Athlete

It is indeed a great pride for our college to have a student who has attained International Fame as an athlete by winning gold medals in some competitions. Such is the case of Parmanand Mudhoo, a student of Lower VI who participated in Sports at National Level and has won a gold medal and a trophy in a 100 meter-race at the Bambous Stadium.

After the sprint competition, he has been selected to represent Mauritius in an International Sports Competition that will be held in June 2015 at the Reunion Island.

Parmanand Mudhoo informed us that he started his journey in the world of sports at the age of 11 after realising how much love he had for athletics. In order to consolidate his sports career, he started taking part in many local sports competitions. The most interesting thing about him is that he is a self-trained athlete. He got his aspirations from his elder brother who has been his only mentor and the only person to inspire and create confidence in him throughout many years.

The D.A.V College has high expectations of Parmanand winning more gold medals at International Level and wish him best of luck in the upcoming competitions.

PTA Meeting 2015

A meeting of the Parent-Teacher's Association was recently held at the DAV College where all the activities carried out by the PTA in the year 2014 were highlighted. The Rector, in his welcome address informed the parents about the initiatives taken by the college for some years, and that positive outcome in terms of excellent results at SC and HSC Exams were being reaped by them and that was indeed an unprecedented success in the annals of the DAV College. He informed the parents that this had been made possible through a systematic hard work and the implementation of several pedagogical strategies. The challenge remains constant and the hard work is not going to stop.

In addition, the treasurer of the PTA, Mr. Yasheel Rughoonath presented the statement of accounts, thereby explaining how the PTA Fund had been used and informed the members about the future plan of activities that were in the pipeline. He assured the parents that the PTA was doing an excellent job in terms of raising maximum funds, which were being greatly useful in the achievement of several projects of the college.

DAV College Visits the Gayasingh Ashram

The College organised a visit to the Gayasingh Ashram recently to donate food to the elderly people and the orphans who are the inmates. This was one of our social activities for this year. This activity was organised by the students of SC and some members of the Teaching Staff in collaboration with the Rector and the Deputy Rector of the college. The Students and the Teachers prepared the food that was served to all the people of the Ashram. A series of activities, such as, a magic show, songs and dance were presented by the students and staff of the DAV College to entertain the inmates.

D.A.V Celebrates the English Day

The English Language is perhaps the only language that is used in almost every country of the world, be it as a first or as a second language. It is the only language that possesses a unique position in being a world language in all activities where a means of communication is needed. This being the case, it is impossible to disregard its importance. Language must be made ever accessible and understood by all. Attempts are always on from all sides to keep the flame burning, one among which is to celebrate the 'English Language Day'.

The English Language Day has a purpose that cannot be ignored or denied. It aims at creating awareness among students and the general public about the importance of knowing this language even in its most elementary form. It also tends to encourage people to learn the language even in the least formal way in order to promote its usage in all possible ways.

The English culture is well known for its Victorian life style, a way of living whereby mannerism and personality development is given common importance. The beauty of this culture speaks out for itself through the English Language. We have also witnessed the beauty of this Language through its powerful Literature where words have been so carefully used to make it very appealing. Many people following the great works of literature of William Shakespeare, love the Language even more than the person revered so much by many lovers of the English Literary Works. It is good to note that the International English Language Day also commemorates the birthday of Sir William Shakespeare, which falls on 23rd April.

It has been made a very common tradition for schools and colleges, D.A.V College being one, to celebrate the English Language Day so as to ensure that our students remain conscious about the position of this language in the world. Students are encouraged to communicate in English on that day and a series of activities are organised in which they are invited to participate in order to promote the English Language. Activities such as 'English Songs', 'Reading Aloud' contest, 'Poetry'recitation, 'Quiz Competition' 'Spelling Bee', 'Tongue Twisters' and 'Dramas' are organised and all participants are rewarded with prizes and tokens for their efforts. Mr. Amal Ghoorah, son of late Dr. H.Ghoorah, sponsored the prizes awarded.

Such activities were organised very recently in the month of April to commemorate the English Language Day. It was a tremendous success with students of all classes having participated in different activities organised by the English Department. The Rector and the Deputy Rector of the college were greatly committed to make the English Language Day a great success at the college. Appropriate addresses were delivered by Mrs Domah, the Deputy Rector and Ms Seerickissen, the English Language Teacher on this occasion. That was then followed by a series of relevant activities.

Le Centenaire Ramsoobhug Goburdhun, O.S.K

Dr Indradev Bholah Indranath

Une personne ayant atteint l'âge de cent ans, c'est vraiment la bénédiction de Dieu. Plusieurs sont décédés que de leur naissance et encore d'autres n'aient pu atteindre l'âge même d'un an. Evidemment c'est grâce à Dieu que monsieur Ramsoobhug Goburdhun a survécu un si long âge de cent ans et est devenu un centenaire le 9 Novembre 2014.

Ramsoobhug est une personnalité très connue de l'Arya Samaj, très dévouée pour ce mouvement. De profession il était un instituteur, devint maître d'école ayant perpétuellement gravi l'échelons de promotion qui était très rare pour un hindou à cette époque.

Ramsoobhug Goburdhun naquit le 9 Novembre 1914 à Beauchamp, à l'est de l'île. Son père était un chanteur talentueux et animait des fêtes en chantant. Plus tard Ramsoobhug hérita ce talent et devint un chanteur de renom. Il composait des chansons également et émerveillait tous par ses chansons à travers l'île.

Ramsoobhug est peut-être le seul survivant aujourd'hui ayant côtoyé le grand pandit de l'Arya Samaj Kashinath Kisto dont il devint le disciple. Il était très inspiré par ses principes védiques dont Pandit ji préchait.

Moi, personnellement, j'ai connu Monsieur Ramsoobhug à l'école Aryan Vedic de L'Aventure ou il était maître-d'école et moi instituteur de la langue Hindi. J'avais beaucoup de respect pour lui car je lui avais connu comme un fervent propagateur de l'hindi à travers ses chansons. Particulièrement il s'adressait en Hindi. Il est également un homme de générosité. Il avait fait un don de Rs5,000 à l'Hindi Lekhak Sangh dont nous gardons une reconnaissance envers lui.

L'année dernière 5 membres de L'hindi Lekhak Sangh dont monsieur Indradev Bholah Indranath, Dr Laldeo Ancharug, Dr Vidoor Dilchand, Bissoonduth Maudhoo et Deoduth Brijmohun nous rendîmes une visite chez lui à Vacoas.

Il était très ému et il nous remercia beaucoup pour cette rencontre.

Nous lui souhaitons encore une longue vie parfaite et heureuse.

माँ

वत्सला राधाकिसुन

नारी शक्ति, असीम शक्ति है माँ,
सब से सुन्दर, सब से प्यारी है माँ ।

शिशु की अनमोल, अनोखी पुकार
जो न समझे कोई अनजान, अजनबी कई बार,
एक ही क्षण में समझ लेता है, उसे माँ
का सच्चा, गहरा प्यार।

बचपन में ही प्राप्त होता है हमें माँ से सुसंस्कार,
गलती करने पर वह याद दिलाती है
हमें सर्वोतम सुधारक शिष्टाचार ।

किशोरावस्था एवं जवानी में वह करती
है हमें उलझनों से सावधान,
निराशा को सदैव दूर कर देती है
उसकी अतुल्य ममता महान् ।

दूर होकर जीवन से भी रह जाती है माँ
एक मिसाल,
जिसे हम आजीवन याद करते हैं हर
पल, हर दिन, हर साल ।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038